International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(2): 42-44

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(2): 42-44
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-01-2018
Accepted: 24-02-2018

डॉ. टेकचन्द मीणा
सहायकाचार्य, संस्कृत–विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. टेकचन्द मीणा
सहायकाचार्य, संस्कृत–विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

कादम्बरी की चाण्डाल–कन्या : एक उज्ज्वल जनजातीय चरित्र

डॉ. टेकचन्द मीणा

प्रस्तावना

बाणभट्ट सम्राट् हर्षवर्धन के (६०६–६४७ ई०) राजकवि थे। इनके दो गद्यकाव्य *हर्षचरित* तथा *कादम्बरी* हैं। इनमें से प्रथम आख्यायिका है जिसकी कथावस्तु इतिहास पर आधारित होती है तथा द्वितीय कथा है जिसकी कथावस्तु कल्पना प्रसूत होती है। [1] बाणभट्ट का जन्मस्थान शोण (सोन) नदी के किनारे वर्तमान शाहाबाद नामक जनपद के प्रीतिकूट में अवस्थित था। उनका जन्म वात्स्यायन–वंश में धनी एवं विद्यासम्पन्न ब्राह्मण–कुल में हुआ। पिता का नाम चित्रभानु तथा माता का नाम राजदेवी था परन्तु दुर्भाग्य से बचपन में ही इनकी माता का स्वर्गवास हो गया और पिता ने ही इनका लालन–पालन किया। बाण चौदह वर्ष के ही थे कि उनके पिता भी परलोक सिधार गये। तत्पश्चात् बाण का मन प्रीतिकूट में नहीं लगा और वे यायावर (इत्वर) हो गये। बाण की मित्र मण्डली में ४४ साथी थे, जिनमें पारशव बन्धु–युगल चन्द्रसेन और मातृषेण भी थे। पारशव अर्थात् द्विज पिता एवं शूद्र माता से उत्पन्न सन्तान । बाण के चण्डक, चामीकर, कुमारदत्त, जीमूत, दामोदर इत्यादि अनेक ऐसे मित्र थे जो वंचित वर्ग से आते थे।

बाणभट्ट की कथा–कृति *कादम्बरी* में चाण्डाल–कन्या, शबर सेना एवं उसके सेनापति की वर्णना लेखक द्वारा बडे मनोयोग से की हुई मिलती है, इन तीनों में चाण्डाल [2] कन्या तथा दो वैयक्तिक जनजातीय चरित्र हैं तथा शबरसेना एक जनजातिसमूह है। इन तीनों की ही वर्णना में बाणभट्ट की दृष्टि में जनजातीय चरित्रों की रूपाकृति उत्कीर्ण मिलती है। उक्त तीनों का वर्णन आलंकारिक शैली में किया गया है।

इनमें से सर्वप्रथम चाण्डाल–कन्या बाणभट्टकृत की वर्णना पर दृष्टिपात किया जा रहा है।

बाणभट्ट ने पुण्डरीक की माता लक्ष्मी को ही चाण्डाल–कन्या के रूप में अवतरित किया है। [3] चाण्डाल कन्या का शारीरिक वर्णन चाण्डालवंशीय लोगों की आकृति के अनुसार किया गया है।

जब प्रतिहारी ने राजा शूद्रक को चाण्डाल–कन्या के आने की सूचना दी, तब राजा ने उसे अपने राजसभा में लाने का आदेश दिया। उस चाण्डाल कन्या के साथ एक वृद्ध चाण्डाल भी था, जो आर्यों की तरह सफेद वस्त्र को धारण किये हुए था– **अनुगृहीतार्य्यवेशेन शुभ्रवाससा पुरुषेणाधिष्ठितपुरोभागाम्।** इस से ज्ञात होता है कि चाण्डाल भी सभ्य जनों के समान वस्त्र धारण करते थे, भले ही किसी स्मृति–ग्रन्थ में कोई विपरीत विधान ही क्यों न हो।

जहाँ तक चाण्डाल–कन्या का प्रश्न है उसकी वर्णना में बाणभट्ट अलङ्कारों की विशिष्ट छटा बिखेरते हैं। चाण्डाल–कन्या के सौन्दर्य वर्णन में अलङ्कारों का प्रयोग विस्मित करने वाला है। उनके द्वारा प्रयुक्त अलङ्कारों से उसकी जो छवि निकलकर सामने आती है वह इस प्रकार है–

---

[1] आख्यायिकोपलब्ध्यार्था । प्रबन्धकल्पना कथा।–अमरकोषः१.६.५–६

[2] चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनङ्गमाः।
निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः।।
अमरकोष में चाण्डाल उक्त दश नाम तथा तीन भेद गिनाये गये हैं–१ किरात, २ शबर, ३ पुलिन्द।– अमरकोषः, पृ० ५६४

[3] नचिरादेव तयोपदिश्यानमार्गा प्रविश्य सा पुरस्तादूर्ध्वस्थितैव राजानमभिभवन्ती धाम्ना प्रागल्भ्येन बभाषे.....। तदहमस्य दुरात्मनो जननी श्रीः।.....इत्यभिदधानैव सा झटिति रणद्भूषणारवबधिरितान्तरिक्षमुत्फुल्लोकलोचनोद्वीक्षिता क्षितेर्गगनमुदपतत्।कादम्बरी उत्तरभाग, पृ.४४१–४४४

क) कादम्बरीकार के अनुसार उस चाण्डाल–कन्या का श्याम वर्ण भगवान् विष्णु के उस मायावी मोहिनी रूप से मिलता था, जिसे उन्होंने दैत्यों से अमृतकुम्भ को छीनने के लिए धारण किया था। **असुरगृहीतामृतापहरणकृतकपटपटुविलासिनीवेशस्य श्यामतया भगवतो हरेरिवानुकुर्वतीम् ।**(यहाँ उपमा अलङ्कार है भगवान् विष्णु के मोहिनी रूप को महाकवि ने चाण्डाल कन्या के उपमान के रूप में उपस्थापित किया है। यह तथ्य उस जनजाति बाला के किसी उत्कर्ष को ही व्यक्त करता है।)

ख) चलती फिरती इन्द्रनीलमणि की पुतली (गुडिया) के समान (इस वर्णना में इन्द्रनीलमणि सदृश मूल्यवान मणि का उपादान उस चाण्डाल कन्या के अनर्घरमणीयत्व का व्यञ्जक है अतःक्रियोत्प्रेक्षा अलङ्कार है।) **संचारिणीमिवेन्द्रनीलमणि–पुत्रिकाम्,** घुटने या टखने तक लटकने वाले नीले परिधान (कञ्चुक, जामा) से ढके हुए शरीर वाली **आगुल्फावलम्बिना नीलकञ्चुकेनाच्छन्नशरीराम्,** सिर पर लाल वस्त्र से घूँघट निकाले हुई अतएव जिस पर सांयकालीन धूप पड रही हो ऐसी नीलकमल भूमि के समान (यहाँ उपमा अलङ्कार द्वारा उसके वसन–विच्छित्ति की मनोहारिणी वर्णना की गयी है।) **उपरि रक्तांशुक–विरचितावगुण्ठनां नीलोत्पलस्थलीमिव निपतितसन्ध्यातपाम्,** एक कान में पहने हुए हाथी दाँत के आभूषण की चमक से श्वेत कपोल मण्डल चन्द्रमा की किरणों से रञ्जित अग्रभाग अर्थात् प्रदोष वेला वाली रात्रि के समान (कान के हाथी दाँत के आभूषण की चमक से उसका श्यामल मुख उस रात्रि जैसा लग रहा था जिसमें उदित होते हुए चन्द्रमा की कान्ति से रात्रि का एक (आद्य) भाग श्वेत वर्ण हो जाता है।(उपमा अलङ्कार) **एककर्णावसक्त–दन्तपत्रप्रभाधवलितकपोलमण्डलाम् उद्यदिन्दुकिरणच्छुरित–मुखमिव विभावरीम्,**

ग) उसके ललाट पर गोरोचना का तिलक तीसरे नेत्र की शोभा दे रहा था, जिससे वह ऐसी प्रतीत हो रही थी मानो शिव के किरात–वेश का अनुकरण कर किरात–वेश लेने वाली पार्वती के समान (उपमा अलङ्कार) **आकपिल–गोरोचना–रचित–तिलक–तृतीय–लोचनाम् ईशानुचरितकिरातवेशामिव भवानीम्,**

घ) अपने हृदय में स्थित भगवान् विष्णु की श्यामली कान्ति से बनी हुई लक्ष्मी हों (उपमा अलङ्कार एवं तद्गुण अलङ्कार) **उरःस्थल–निवास–संक्रान्त–नारायण–देहप्रभा–श्यामलितामिव श्रियम्,**

ङ) शिव की क्रोधाग्नि में दग्ध कामदेव के शरीर के धुएँ से काली पडी हुई रति हो (अतिशयोक्ति–उपमा मूलक सङ्कर अलङ्कार है) **कुपित–हर हुताशन–दह्यमान–मदन–धूम–मलिनीकृतामिव रतिम्,**

च) बल के मद में उन्मत्त भगवान् बलराम के हल से खींचे जाने के भय से भागी हुई कृष्ण–प्रिया कालिन्दी, यानी यमुना हो (उत्प्रेक्षा अलङ्कार) **उन्मद–हलि–हलाकर्षण–भय–पलायितमिव कालिन्दीम्,**

छ) अत्यन्त प्रगाढ आलते से रँगे हुए पल्लव –सदृश उसके चरणकमल ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो सद्य मारे गये महिषासुर के रक्त में सने हुए चरणों वाली भगवती कात्यायनी हो (यहाँ उपमा एवं पुनरुक्तवदाभास अलङ्कार है) **अतिबहल–पिण्डालक्तक–रस–राग–पल्लवितपादपङ्कजाम् अचिर–मृदित–महिषासुर–रुधिर–रक्तचरणामिव कात्यायनीम्,**

ज) उसके ललाई लिए हुए पैरों की अँगुलियों के नख भी लाल थे जिनकी परछाईं मणियों के फर्श पर पड रही थी, मानो ज्ञात होता था कि कठिन भूमि में सुकुमार पैरों के रखने के लिये पल्लव बिछाती हुई चल रही हो(यहाँ क्रियोत्प्रेक्षा अलङ्कार है) **आलोहिताङ्गुलि–प्रभा–पाटलित–नख–मयूखाम् अतिकठिन–मणिकुट्टिम–स्पर्शमअसहमानां क्षितितले पल्लवभङ्गानिव निधाय सञ्चरन्तीम्,**

झ) नूपुरों में जडी हुई मणियों की लाल–पीली किरणों ने उसके शरीर को इस प्रकार आविष्ट कर लिया था, मानों उसके रूप पर मुग्ध हुए अग्निदेव ने उसकी जाति को पुनीत करने के लिए प्रजापति ब्रह्मा के विधान को मिटाकर उसके शरीर को अपने आलिङ्गन में बाँध लिया हो (यहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार है) **आपिञ्जरेणोत्सर्पिणां नूपुरमणीनां प्रभाजालेन रञ्जितशरीरतया पावकेन भगवता रूप एव–पक्षपातिना प्रजापतिमप्रमाणीकुर्वता जातिसंशोधनार्थमालिङ्गितदेहाम्,**

ञ) करधनी की उपमा में दो कल्पनाएँ हैं पहली तो करधनी में २७ पुष्प हैं, जो नक्षत्रों को पंक्तिवाले कामदेव के हाथी की शिरोमाला–सी प्रतीत होती है। दूसरी उसकी नाभि से ऊर्ध्वगामी रोमावली रूपी लता के मूल में जल डालने के लिए बने थाल के घेरे के समान प्रतीत होने वाली करधनी से उसका कटि घिरा हुआ था(रोमराजि पर लता का आरोप से रूपक, नक्षत्रमालायमानेन से उपमा) **अनङ्ग–वारण–शिरो–नक्षत्रमालायमानेन रोमराजि लतालवालकेन मेखलादाम्ना परिगतजघनाम्,**

ट) अत्यन्त मोटे–मोटे अर्थात् बडे–बडे मोतियों से बना हुआ श्वेत हार गले में ऐसा लग रहा था मानों यमुना की भ्रान्ति से गङ्गा का प्रवाह उसके गले में लपट कर गया हो (गङ्गा की सम्भावना से उत्प्रेक्षा तथा यमुना की भ्रान्ति से भ्रान्तिमान अलङ्कार) **अतिस्थुल–मुक्ताफल–घटितेन शुचिना हारेण गङ्गास्रोतसेव कालिन्दीशङ्कया कृतकण्ठग्रहाम्,**

ठ) **राजा** शूद्रक ने उस चाण्डाल कन्या को देखा कि खिले हुए नेत्र सदृश कमलों वाली शरद् ऋतु के समान (कन्या–पक्ष में– खिले हुए कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाली थी) (उपमा) **शरदमिव विकसित–पुण्डरीक–लोचनाम्,** जो घन (बादल) रूपी केशों वाली वर्षा ऋतु के समान थी(कन्या–पक्ष में– घने केशों के समूह से युक्त थी) **प्रावृषमिव घनकेशजालाम्,** जो चन्दन के पल्लवरूपी आभूषणों वाली मलयाचल की मेखला (मध्यभाग) के समान थी (कन्या–पक्ष में– चन्दन के नवपल्लवों को ही आभूषण बनाए हुई थी)(रूपक) **मलयमेखलामिव चन्दनपल्लवावतंसाम्,** जो चित्रा, श्रवण और भरणी नामक नक्षत्रों से युक्त नक्षत्रमाला के समान थी(कन्या–पक्ष में– चित्र= अद्भुत श्रवणाभरण= कानों के आभूषणों से भूषित थी)(रूपक) **नक्षत्रमालामिव चित्रश्रवणा–भरण–भूषिताम्,** जो हाथों में स्थित कमलों से शोभायुक्त लक्ष्मी के समान थी(कन्या–पक्ष में– हाथों में रेखाचिह्न के रूप में बने कमलों से शोभायमान थी) **श्रियमिव हस्तस्थित–कमलशोभाम् मूर्च्छामिव मनोहारिणीम्,** (वनभूमि के समान न भोगे गये सौन्दर्य के समान)(सभङ्ग श्लेष)**अरण्यभूमिमिव अक्षतरूपसम्पन्नाम्**,(देव स्त्री के समान) **दिव्ययोषितमिवाकुलीनाम्,** (नींद के समान नेत्रों को आकर्षित करनेवाली) **निद्रामिव लोचनग्राहिणीम्, अरण्यकमलिनीमिव मातङ्गकुलदूषिताम्**, (अमूर्त (अशरीरी) के समान स्पर्श न करने योग्य) **अमूर्त्तामिव स्पर्शवर्जिताम्,** (केवल दर्शनमात्र ही जिसका फल हो न कि स्पर्श भी, ऐसी चित्रलिखित वस्तु के समान केवल दर्शन मात्र ही (न कि उपभोग आदि भी) फल वाली) **आलेख्यगतामिव दर्शनमात्रफलाम्**, (वसन्तकाल में जातिपुष्प अर्थात् मालती से रहित) **मधुमास–कुसुम–समृद्धिमिव अजातिम्**, (मुट्ठी से पकड़े जाने योग्य मध्य भाग वाले कामदेव के पुष्प के धनुष की लता के समान मुष्टि ग्राह्य कटि प्रदेश वाली) **अनङ्ग–कुसुम–चापलेखामिव मुष्टिग्राह्यमध्याम्**, (अलकापुरी में सुशोभित होने वाली कुबेर की लक्ष्मी के समान अलकों से शोभायमान) **यक्षाधिपलक्ष्मीमिवालकोद्भासिनीम्,** (शीघ्र ही प्राप्त यौवन वाली) **अचिरोपरूढयौवनाम्**, (अतिशय सौन्दर्य शालिनी आकृति वाली) **अतिशयरूपाकृतिम्,** (राजा ने बिना पलक झपकाये उस कन्या को देखा) **अनिमिष–लोचनो ददर्श।**

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि तत्कालीन समाज में उक्त जनजातियों की स्थिति कुछ भी रही हो परन्तु महाकवि बाणभट्ट की चरित्रों वर्णना में उनकी उस प्रकार की एकांगी छवि अंकित नहीं हुई है। कादम्बरी की अलङ्कार समृद्ध शैली इन चरित्रों के अनेक धवल पक्षों को बडे भास्वर रूप में सहृदयों के सम्मुख उपस्थापित करती है। इन चरित्रों की वर्णना में महाकवि द्वारा उपात्त उपमान अत्यन्त व्यापक हैं। विशेष रूप से चाण्डाल कन्या के निरूपण में उन्होंने अनेक दिव्य तथा श्रेष्ठ लौकिक उपमानों का प्रयोग किया है। वास्तविकता भी यही है कि उस चाण्डाल कन्या की चारुता का निरूपण किन्हीं सामान्य उपमानों के द्वारा किया भी नहीं जा सकता । यद्यपि बीच–बीच में है तत्कालीन समाज के प्रतिबिम्बन के कारण उसका सामान्य चरित्र कुछ म्लान रूप में प्रस्तुत होता है तथापि कादम्बरी की अलङ्कार–योजना उसके चरित्र के बहुलांश को बड़ा धवल आसन प्रदान करती हुई दिखती है।

सन्दर्भ –सूची

1. त्रिपाठी जयशङ्करलाल, *कादम्बरी पूर्वार्द्ध*, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 2013
2. त्रिपाठी जयशङ्करलाल, *कादम्बरी उत्तरार्द्ध*, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी,प्रथम संस्करण 1998